हिन्दू जीवन पथ के संस्कार

प्रत्येक समाज में मानव जीवन के कुछ संक्रान्ति काल माने जाते हैं, तथा इन पर जीवन की गति एक नया मोड़ लेती है, यही कारण है कि इन संक्रान्ति कालों पर प्रत्येक समाज में विशेष धार्मिक एवं सामाजिक कृत्य करने का विधान रहता है। हिन्दू समाज भी इसका अपवाद नहीं है। हिन्दू समाज में तो सम्भवतः विश्व के सभी समाजों से अधिक संक्रान्ति काल माने जाते हैं - इस अवसर पर की जाने वाली क्रिया को हिन्दू "संस्कार" के नाम से पुकारते हैं। हिन्दू जीवन में व्यक्ति के लिये संस्कारों का बहुत महत्त्व है,

जीवन पथ के संस्कार =		'life-path rituals'
संक्रान्ति	f	passage
गति	f	road, direction
मोड़	m	turn, bend
धार्मिक	adj	religious
सामाजिक	adj	social
कृत्य	m	duty
विधान	m	regulation
अपवाद	m	exception
सम्भवतः	adv	possibly
विश्व	m	universe, world
क्रिया	f	act
संस्कार	m	ceremony, sacrament
व्यक्ति	m	person, individual
महत्त्व	m	importance

पुस्तक के कलेवर को ध्यान में रखते हुए इन पर हम संक्षेप में ही प्रकाश डालेंगे।

हिन्दू धर्म में 'व्यक्ति' को बहुत महत्त्व दिया गया है, यही कारण है कि उसके जीवन को चार भागों में बाँटकर केवल एक भाग को ही सामाजिक बताया गया है। यहाँ व्यक्ति के मोक्ष की कामना अत्यधिक प्रबल होती है, इसका कारण है कि हिन्दू धर्म के अनुसार जीवात्मा परमात्मा का ही अंश है, पर माया के प्रभाव से वह कर्म-बन्धन में फँसता है। हिन्दू धर्म हर सम्भव प्रयत्न यही करता है कि मनुष्य योनि में आकर जीवात्मा इतने पवित्र कर्म

पुस्तक का कलेवर	m	body of literature
ध्यान	m	attention
संक्षेप	m	summary
प्रकाश डालना	m+t	to shed light
मोक्ष	m	release
कामना	f	desire
अत्यधिक	adv	extremely
प्रबल	adj	strong
जीवात्मा	m	individual soul
परमपिता	m	highest soul
अंश	m	part
माया	f	illusion
प्रभाव	m	influence
कर्म-बन्धन	m	bonds of karma
फँसना	i	to be entrapped
सम्भव	adj	possible
प्रयत्न	m	effort
योनि में आना	(f)	to be born 'into the flesh'
पवित्र	adj	holy
कर्म	m	action

करे कि वह सदा के लिए कर्म-बन्धन से मुक्त हो जाए। इसी भाव के कारण किसी नए कर्म के करने से पहले यहाँ आदि देव, परमपिता, परमेश्वर एवं अन्य देवी देवताओं की अनेक धार्मिक विधि विधान से पूजा की जाती है।

हिन्दू संस्कार से आत्मा का परिशुद्धन समझते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ भी परिशोधन अथवा शुद्ध करना है। इसका अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक और मानसिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों में से है, जिनसे वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके। आत्मा का शोधन यज्ञ आदि क्रियाओं से ही सम्भव है। आत्मा कहीं कलुषित

सदा के लिए	adv ph	forever
मुक्त	adj	released
भाव	m	feeling
आदि देव	m	The Highest God
परमेश्वर, परमपिता	m,m	The Highest God
धार्मिक विधि	m	religious law
पूजा	f	worship
परिशुद्धन	m	purification
शाब्दिक अर्थ	m	definition
शुद्ध करना	adj+t	to purify
अभिप्राय	m	significance, meaning
शुद्धि	f	purification
दैहिक	adj	material, physical, bodily
मानसिक	adj	mental
परिष्कार	m	cleansing
अनुष्ठान	m	ritual
सदस्य	m	member, participant
शोधन	m	purifying
यज्ञ	m	sacrifice
कलुषित	adj	impure

न हो पाये इस के लिए संस्कार क्रियाओं की अति आवश्यकता समझी जाती है। जीवन के विकास क्रम में बहुत-सी बाधाएँ एवं विघ्न आदि हमारे सम्मुख आते हैं। इन विघ्न-बाधाओं का भी निराकरण संस्कार के ही द्वारा होता है। संस्कार में उपकरण के रूप में अग्नि, जल एवं मन्त्र आदि ऐसे उपादानों का प्रयोग किया जाता है जो अशुभनाशक हैं। इसके साथ ही मन्त्रों का उच्चारण, दण्ड का धारण, पुरोहित द्वारा देव रूप होकर आशीर्वाद देना, सभी अशुभ नाश करने के उपकरण हैं। अशुभ शक्तियों से बचने का विधान किया गया है तथा गोबर के प्रयोग को स्थान दिया गया जिससे

अति आवश्यकता	f	extreme importance
विकास क्रम	m	evolution
बाधा	f	impediment
विघ्न	m	obstacle
के सम्मुख	pp	in front of
निराकरण	m	removal
उपकरण	m	means, paraphernalia
अग्नि	m	fire
जल	m	water
मन्त्र	m	incantation, Mantra
उपादान	m	material, preparation
प्रयोग	m	use
अशुभनाशक	adj	evil-destroying
उच्चारण	m	uttering
दण्ड	m	stick
धारण	m	holding
पुरोहित	m	priest, Purohit
आशीर्वाद	m	blessing
शक्ति	f	force, power
गोबर	m	cow dung

भूत-प्रेत का कोई स्थान हमारे जीवन में न रह सके। जहाँ एक ओर उपर्युक्त उपकरणों के विधान द्वारा अशुभ शक्तियों का विनाश किया जाता है, वहीं शुभ शक्तियों का आवाहन भी किया जाता है। यह पुरोहित अनुष्ठान, शुभ घड़ी, देवता एवं पितरों के आमन्त्रण से करता है। इस याज्ञिक विधि में ब्राह्मण या पुरोहित कुछ मन्त्रों का प्रयोग करते हैं, जिसमें अधिकाँश देवी देवताओं की स्तुति के ही होते हैं तथा उनसे बालक के लिए श्रीवृद्धि माँगी जाती है। इस क्रिया के पश्चात् ही बालक को या व्यक्ति को नये पथ पर चलने की कुछ शिक्षाएँ भी दी जाती हैं।

संस्कारों का महत्त्व समाज के मूल्यों एवं उसकी धारणाओं की रक्षा करने

भूत-प्रेत	m	ghosts and demons
उपर्युक्त	adj	aforementioned
विनाश	m	destruction
आवाहन	m	invoking
शुभ घड़ी	adj+f	auspicious occasion
पितर	m	ancestral spirit
आमन्त्रण	m	invoking
याज्ञिक विधि	adj+f	ritual formula
स्तुति	f	praise
बालक	m	offspring
श्रीवृद्धि	f	increase
के पश्चात्	pp	afterwards
शिक्षा	f	instruction, education
मूल्य	m	value
धारणा	f	belief(s)
रक्षा	f	protection

की दृष्टि से भी कम नहीं है। यदि समाज अपने मूल्यों, प्रतिमानों एवं आदर्शों को सजीव रखना चाहता है तो उसे अपने व्यक्तियों को उनमें अनुशासित एवं दीक्षित करना होगा। संस्कार व्यक्तियों को अनुशासित एवं दीक्षित करने के सफल एवं सशक्त माध्यम हैं। संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति को संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्तों को समझाना सरल रहता है। उसके चारों ओर इस प्रकार का वातावरण प्रस्तुत कर दिया जाता है कि वह बिना किसी प्रयास के उनके बारे में सब कुछ जान जाता है। संस्कृति के प्रतिमानों को जानना मात्र ही सब कुछ नहीं यदि उनका दिन-प्रतिदिन के जीवन में उपयोग नहीं किया गया। संस्कारों के माध्यम से इन मूल्यों एवं प्रतिमानों

दृष्टि	f	point of view
प्रतिमान	m	ideal
आदर्श	m	standard
सजीव	adj	viable; lively
अनुशासित	adj	instructed
दीक्षित	adj	initiated
सफल	adj	successful
सशक्त	adj	forceful
माध्यम	m	medium
संस्कृति	f	culture
मूलभूत	adj	basic
सिद्धान्त	m	principle
सरल	adj	simple
वातावरण	m	atmosphere
प्रस्तुत करना	adj+t	to present
प्रयास	m	effort
मात्र ही	adv	merely
उपयोग	m	use

का अभ्यास कराया जाता है। अभ्यास के द्वारा व्यक्ति बिना किसी कठिनता के अपने को सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं के अनुकूल बना लेता है। सामाजिक मूल्यों का ज्ञान एवं उनका अभ्यास दोनों मिलकर सामाजिक संगठन एवं व्यवस्था के प्रति निष्ठा एवं दृढ़ता उत्पन्न करते हैं। हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता के पीछे उनके जीवन में होनेवाले नियमित एवं अनिवार्य संस्कार ही रहे हैं।

हिन्दू जीवन में कितने संस्कार होते हैं, एवं होना चाहिये, एक विवाद का विषय है, अतः इस पचड़े में न पड़कर यहाँ उन्हीं संस्कारों का उल्लेख करेंगे जो कि हिन्दू समाज में प्रचलित हैं। फिर भी यहाँ इतना बता देना उचित

अभ्यास	m	practice
कठिनता	f	difficulty
मान्यता	f	(respected) standard
के अनुकूल	pp	in accordance with
ज्ञान	m	knowlege
संगठन	m	organization
व्यवस्था	f	order
के प्रति	pp	towards
निष्ठा	f	faith
दृढ़ता	f	firmness
स्थिरता	f	stability
नियमित	adj	prescribed
अनिवार्य	adj	unopposable
विवाद	m	debate
विषय	m	subject
पचड़ा	m	argument
उल्लेख करना	m+t	to write about
प्रचलित	adj	prevalent
उचित	adj	proper

होगा कि वेदों में, विशेष रूप से ऋगवेद में केवल तीन संस्कारों का ही उल्लेख है - वे हैं गर्भाधान, विवाह एवं मृत्यु। इस के अनन्तर यजुर्वेद में उपनयन तथा मुण्डन का भी उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद कुछ ऐसा प्रतीत होता है उनकी व्यवस्थित संख्या निश्चित की जाने लगी थी। बाद के धर्म सूत्रों में तो संस्कारों की संख्या बढ़ाने की होड़-सी लग गयी प्रतीत होता है क्यों कि अश्वालमन* ने ग्यारह, पारस्कर* एवं बौद्धायन* ने तेरह तो गौतम* धर्म सूत्र ने चालीस संस्कारों का उल्लेख किया है। ऋषि दयानन्द ने सबको एकत्रित करके सोलह संस्कार निर्धारित किये हैं। संस्कारों की विधि के बारे में कह देना आवश्यक है कि हिन्दुओं में इतने

गर्भाधान	m	conception
मृत्यु	m	death, funeral rites
के अनन्तर	pp	right after
उपनयन	m	initiation ceremony, Upanayana
मुण्डन	m	first haircut
ग्रन्थ	m	(holy) book
व्यवस्थित	adj	prescribed
प्रतीत	adj	known
संख्या	f	number
निश्चित करना	adj+t	to decide
धर्म सूत्र	m	religious texts (Dharma Sūtras)
होड़ m	rivalry	
ऋषि	m	sage, Ṛiṣi
दयानन्द	PN	Dayānanda
एकत्रित करना	adj+t	to collect
निर्धारित करना	adj+t	to name

* names of authors

मतमतान्तर हैं कि इसकी सर्वविदित प्रणाली का विवेचन प्रायः कठिन ही है; अतः शास्त्रीय प्रमाणों पर ही विवेचन करने का प्रयास किया है।

(१) <u>गर्भाधान</u> - "जिस कर्म के द्वारा पुरुष स्त्री में अपना बीज स्थापित करता है उसे गर्भाधान कहते हैं।" हिन्दू धर्म के अनुसार पुत्र का उत्पन्न करना एक पवित्र कृत्य माना गया है। विवाह की चौथी रात्री में गर्भाधान करने का विधान है। दिन में नहीं क्योंकि पुत्र कामी होगा। रात्री में मध्यरात्रि को उचित माना है तथा अनेक पर्वों की रात्रि को भी उचित नहीं माना गया है, वैसे इस विषय में ज्योतिष् शास्त्रियों में मतभेद ही है। यदि

मतमतान्तर	m	varying opinions
सर्वविदित	adj	thorough
प्रणाली	f	method
विवेचन	m	investigation
शास्त्रीय	adj	scientific
प्रमाण	m	proof
प्रयास	m	effort
बीज	m	seed
स्थापित करना	adj+t	to establish
उत्पन्न करना	adj+t	to give birth
पवित्र	adj	holy
चौथा	adj	fourth
चौथी	f	the cermony performed on the 4th night after the marriage
रात्रि	f	night
कामी	adj	lustful
मध्यरात्रि	f	midnight
पर्व	m	period, time
ज्योतिष् शास्त्री	adj+m	astrology+scientist, astrologer
मतभेद	m	difference of opinion

कोई पुरुष अपने शुक्र को विधिवत स्त्री के गर्भ में नहीं रखता है तो पराशर के अनुसार वह ब्रह्महत्या का भागी होता है। इसका कारण निर्बल, कुरूप, विकलांग अथवा मरी हुई सन्तान होने से बचाना हो सकता है। स्त्री के लिए भी कुछ प्रतिबन्ध हैं; विष्णु-पुराण के अनुसार जिस स्त्री ने स्नान न किया हो, रोगग्रसित हो, आर्तावस्था में हो, क्रुद्ध हो, जो अन्य पुरुष से प्रेम करती हो, उसके साथ गर्भाधान नहीं करना चाहिये एवं अपनी सुशील पत्नी के साथ जब वह ऋतुमती हो तो उसके चौथे या पाँचवें दिन स्नान करके रात्रि में यथा विधि गर्भाधान करे। इस संस्कार का आज के जीवन में नवीन संस्कृति के कारण कोई महत्त्व नहीं रह गया है।

शुक्र	m	semen
विधिवत	adv	according to prescription
गर्भ	m	womb
पराशर	PN	Parāśara (an ancient law-giver)
ब्रह्महत्या	f	sacrilege
भागी	m	perpetrator
निर्बल	adj	weak
कुरूप	adj	deformed
विकलांग	adj	crippled
सन्तान	m/(f)	offspring
प्रतिबन्ध	m	restriction
विष्णु-पुराण	PN	Vishṇu Purāṇa (a text)
स्नान करना	m+t	to bathe
रोगग्रसित	adj	taken ill
आर्तावस्था	f	injured state
क्रुद्ध	adj	angry
सुशील	adj	gentle, obliging
ऋतुमती	adj	menstruating
यथा	prep	according to

(२) पुंसवन - जिस स्त्री के द्वारा पुरुष संतति के जन्म की व्यवस्था की जाए उसे पुंसवन संस्कार कहते हैं। यदि स्त्री पहली बार गर्भवती हो तो इसे तीसरे मास में किया जाता है, अन्यथा गर्भ-धारण के दो मास से आठ मास तक कभी किया जा सकता है। इसमें विभिन्न देवताओं की पूजा की जाती है। स्त्री के दाहिने नासिका पुट में वट वृक्ष का दूध डाला जाता है, जिससे कि गर्भपात न हो। उसके अंक में जल पूरित घट रखकर पति गर्भ का स्पर्श कर प्रार्थना करता है।

(३) सीमान्तोन्नयन - इस संस्कार का समय चतुर्थ मास है। इस समय

पुंसवन	m	'male-ing' (name of a ceremony)
संतति	f	offspring
गर्भवती	adj	pregnant
मास	m	month
अन्यथा	m	otherwise
गर्भ-धारण	m	pregnancy
विभिन्न	adj	various
नासिका पुट	m	nostril
वट	m	Banyan tree
गर्भपात	m	miscarriage
अंक	m	lap
पूरित	adj	full
घट	m	pitcher
स्पर्श करना	m+t	to touch
प्रार्थना	f	prayer
सीमान्तोन्नयन	m	The Hair-parting
चतुर्थ	adj	fourth

पति को स्त्री के केशों को सजाने का विधान है। इससे यही सिद्ध होता है कि दोनों हँसी खुशी से रहें।

(४) <u>जातकर्म</u> - यह संस्कार बालक के जन्म के समय का है। जब बालक का जन्म हो जाता है, उस समय अनेक अनिष्टकारी प्रभावों से बचाने के लिए इस संस्कार को किया जाता है। पिता अपने नवजात शिशु को छूता है, सूँघता है और आशीर्वचन मन्त्रों का उच्चारण करता है। इसके बाद बालक को शहद चटाया जाता है और मक्खन भी तथा उसके बाद पहली बार माता का दूद्ध पिलाया जाता है। इसी समय बच्चे की नाभि काटकर माता तथा बच्चे को स्नान कराया जाता है।

केश	m	hair
सजाना	t	to decorate
सिद्ध होना	adj+i	to be proved
हँसी	f	happiness
जातकर्म	m	'Birth-ceremony'
अनिष्टकारी	adj	undesirable
प्रभाव	m	influence
बचाना	t	to save
नवजात	adj	newborn
शिशु	m	baby
छूनाt	to touch	
सूँघना	t	to smell
आशीर्वचन	m	benediction, blessing
उच्चारण	m	chant
शहद	m	honey
चटाना	t	to lick
मक्खन	m	butter
पिलाना	t	to give to drink
नाभि	f	navel, umbilical cord

जातकर्म का संस्कार बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः इसकी विभिन्न प्रकार की रीतियाँ हिन्दू समाज में पायी जाती हैं। जैसे बच्चे के पैदा होने पर यदि लड़का होता है तो तवा बजाया जाता है। लड़की होती है तो चलनी। लड़के होने पर बाजे भी बजाये जाते हैं। द्वार पर अग्नि प्रज्वलित कर दी जाती है और वह चौबीस घण्टों तीन दिन तक या पाँच दिन तक जलती ही रहती है। यह क्रिया सम्भवतः भूत-बाधाओं से बचने के लिए की जाती है। बच्चे के पैदा होते ही संभ्रान्त हिन्दू परिवारों में बच्चे की जीभ पर सोने की बाली से या सलाई से ओम लिखने का रिवाज है।

महत्त्वपूर्ण	adj	important
रीति	f	ritual, custom
पैदा होना	i	to be born
तवा m	griddle	
बजाना	t	to ring, to strike
चलनी	f	seive
बाजा	m	(musical) band
बजवाना	t	to cause to play (music)
प्रज्वलित	adj	lit
जलती	adj	burning, lit
सम्भवतः	adv	possibly
भूत-बाधा	m+m	ghost-trouble
संभ्रान्त	adj	renowned
जीभ	f	tongue
सोना	m	gold
बाली	f	earring
सलाई	f	needle
ओम	m	the sacred syllable 'Om' ॐ
रिवाज	m	custom

(५) नामकरण - नामकरण का महत्त्व भी हिन्दू समाज में कम महत्त्व का नहीं है। बच्चे का नाम प्रायः जन्म के दसवें, बारहवें अथवा सौ दिनों के बाद रखने का विधान है। वर्ष के अन्त पर भी नाम रखा जा सकता है। नाम प्रायः नक्षत्रों, देवताओं, कुल देवता, ग्राम देवता आदि पर रखे जाते हैं, दिनों के नाम पर भी रख दिये जाते हैं। कभी-कभी किसी के बच्चे जब जीते नहीं हैं तब उनके ऊटपटांग नाम रखे जाते हैं जैसे घसीटा, लेटू, चेतू, भगर, मिड़ई, भिक्कू आदि। सम्भवतः उसका तात्पर्य यही है कि भूत-प्रेत बाधा नाम से डर जाए तथा बच्चे का अनिष्ट न हो। वैसे हिन्दुओं में अधिकांश नाम सार्थक होते हैं। इस के साथ एक बात और ध्यान देने की है कि यहाँ ज्योतिष् का बड़ा विचार किया जाता है; अतः बच्चे की राशि पर ही नाम रखे जाते हैं। यहाँ इतना कह देना चाहिये कि वर्णमाला के कुछ अक्षर

नामकरण	m	'Naming Ceremony'
नक्षत्र	m	stars, constellations
देवता	m	god
कुल	m	family
ग्राम	m	village
ऊटपटांग	adj	meaningless
तात्पर्य	m	significance
प्रेत	m	demon
डर	m	fear
अनिष्ट	adj	misfortune (*lit.* 'undesired')
सार्थक	adj	meaningful
ज्योतिष्	m	astrology
राशि	f	astrological sign
वर्णमाला	f	alphabet
अक्षर	m	a letter of the alphabet

प्रत्येक राशि के लिए अलग-अलग होते हैं जैसे 'क' अक्षर कुम्भ को 'प' कन्या को बताता है। इस प्रकार कुम्भ राशि वाले का नाम कमला, कृष्ण, कान्त, कीर्ति आदि तथा सिंह राशि वाले भूपेन्द्र, भीम सिंह, भूपति, भूतनाथ आदि। इन नामों में सार्थक नाम ही अधिक होते हैं। हिन्दुओं की एक शाखा सिक्खों में नाम रखने की विचित्र प्रणाली है, वे पूजा के बाद जिस चीज़ को देखते हैं उसी पर नाम रख देते हैं जैसे दरबार सिंह, किताब सिंह, झंडा सिंह आदि।

इस नामकरण में एक बात ध्यान देने की है कि वर्ण व्यवस्था या जाति का विशेष ध्यान रखा जाता है जैसे ब्राह्मण जाति के लोगों के नाम के आगे सिंह नहीं होता है, उनके नाम देवताओं के नाम के ऊपर ही अधिक होते हैं तथा उनके अन्त में कुमार चन्द्र आदि कोमल शब्द भी जोड़ दिया जाता है। परन्तु क्षत्रिय वर्ग के नाम के आगे सिंह अवश्य जोड़ा जाता है। जैसे लाल सिंह, मानसिंह, भूपतिसिंह, लाखनसिंह, जगतसिंह, महिपतसिंह, नैपालसिंह, इन्दरसिंह आदि। इसी प्रकार वैश्यों के नाम के आगे गुप्त लगाया जाता है जैसे चित्रगुप्त, मित्रगुप्त, चन्द्रगुप्त आदि। शूद्रों के नाम के आगे दास जोड़ने

कुम्भ	m	'Aquarius'
शाखा	f	branch
सिक्ख	PN	Sikh
प्रणाली	f	system
विचित्र	adj	strange
झंडा	m	flag
वर्ण-व्यवस्था	f	Varṇa, class system
जाति	f	caste
के आगे	pp	in front of
कोमल	adj	soft
जोड़ना	t	to add, to join
वर्ग	m	class
गुप्त	PN	('hidden')

की प्रथा है जैसे रामदास, लक्ष्मनदास, भगवानदास; 'चरन' भी जोड़ा जाता है जैसे कालीचरन, भगवतीचरन आदि। उपर्युक्त स्थिति का आजकल अपवाद भी मिलता है। लड़कियों के नाम प्रायः एक से ही होते हैं।

(६) निष्क्रमण - बालक के जन्म के बाद एक दम माता को बाहर नहीं निकलने दिया जाता है। उसे बालक के जन्म के बारहवें दिन से चौथे मास तक ही बाहर लाया जाता है। यह क्रिया या तो बालक के नामकरण के साथ ही हो जाती है या पहले। पहले घर के आँगन में या बरामदे में कोई भाग गोबर से लीप लिया जाता है। लीपकर चौक भी पूरा जाता है तथा वहाँ धान बिखराया जाता है; किन्हीं-किन्हीं जगह तो जिस कमरे से माँ को गुज़रना होता है, उस कमरे से लेकर सूर्य दर्शन के स्थान तक जिसे कि पहले ही लीपा जा चुका है लीपा जाता है। सूर्यदर्शन पिता कराता है; यदि वह किसी कारण से उपस्थित नहीं होता तो यह क्रिया देवर से ही सम्पन्न करा

उपर्युक्त	adj	aforementioned
अपवाद	m	disfavour
निष्क्रमण	PN	'The Stepping-out Ceremony'
एक दम	adv ph	at once
क्रिया	f	activity
आँगन	m	courtyard
बरामदा	m	Veranda, porch
गोबर	m	cow dung
लीपना	t	to plaster, to smear
चौक	m	(ritual) patterns on wall or floor
धान	m	raw rice
बिखराना	t	to spread
गुज़रना	i	to pass
सूर्य-दर्शन	m	'Sun-homage' , sun viewing
देवर	m	husband's younger brother
सम्पन्न करना	t	to take charge of

ली जाती है। इसमें सूर्य दर्शन होती है, साथ ही पूजन भी। यदि इस क्रिया को देवर सम्पन्न करता है तो उसे अधिकार होता है कि वह भाभी से वांछित वस्तु की माँग करे तथा वह भाभी को देनी होती है।

(७) अन्नप्रासन - जब क्रमशः माता का दूध घटने लगता है एवं बच्चे की पाचन शक्ति कुछ अधिक हो जाती है, तब उसे अन्न खिलाना प्रारम्भ किया जाता है। यह जन्म से छठे महीने में होता है। इस में अन्न के साथ घृत एवं मधु, खीर आदि खिलाया जाता है। कहीं-कहीं दूध भात खिलाने का रिवाज भी है।

(८) चूड़ा करण - इसे मुण्डन या केशोच्छेदन संस्कार भी कहते हैं।

भाभी	f	elder brother's wife
वांछित	adj	desirable
वस्तु	f	thing
माँग	f	request
अन्नप्रासन	PN	'Food-giving Ceremony'
घटना	i	to decrease
पाचन	adj	digestive
अन्न	m	food
खिलाना	t	to feed
प्रारम्भ करना	m+t	to begin
छठा	adj	sixth
घृत	m	ghee, clarified butter
मधु	m	honey
खीर	m	rice with milk, gruel
भात	m	boiled rice
चूड़ा करण	PN	'Topknot-making Ceremony'
मुण्डन	m	tonsure, haircut
केशोच्छेदन	m	hair-cutting

पाराशर गृह्य सूत्र का मत है कि जन्म के "प्रथम वर्ष के अन्त में अथवा तीसरे, पाँचवें या सातवें वर्ष में किया जाए।" यह तीसरे वर्ष ही किया जाता है। इसमें गर्भ के समय के बालों को नाई काट देता है तथा इन बालों को कहीं उड़ने नहीं दिया जाता है। एक आटे की लोई में, कहीं-कहीं बरगद के पत्ते पर ये सब बाल ऊपर ही ऊपर ले लिये जाते हैं, तथा आटे की लोई में बन्द कर इनको गंगा जी में, या तालाब में बहा दिया जाता है, अथवा ज़मीन में गाड़ दिया जाता है। इस समय नाई विशेष नेग लेता है। बालों के कट जाने के बाद सर पर मक्खन या दही मल कर बच्चे को स्नान करा दिया जाता है।

पाराशर गृह्य सूत्र	PN	the Gṛhya Sūtra of Parāśara
मत	m	opinion
जन्म	m	birth
गर्भ	m	womb
बाल	m	hair
नाई	m	barber
काटना	t	to cut
उड़ना	i	to fly
आटे की लोई	f	flour dough
बरगद	m	banyan tree
पत्ता	m	leaf
तालाब	m	pond, tank
बहाना	t	to put in water (cause to swim)
गाड़ना	t	to bury
नेग	m	a present
दही f	curds, yugurt, buttermilk	
मलना	t	to rub
स्नान	m	bath

उसके बाद माता बच्चे की घुटी चिकनी खोपड़ी पर काजल या टीका भी लगाती है, जिससे बच्चे को नज़र न लगे। यज्ञ वेदी के पास हवन एवं आशीर्वचन होता है। इस संस्कार का भी काफ़ी प्रचलन है; तथा बहुत से लोग देवी के मन्दिर में जाकर या गंगा के किनारे जाकर ही मुण्डन कराते हैं।

(९) कर्ण भेद - कर्ण भेद संस्कार सभी हिन्दू परिवारों में नहीं पाया जाता है, फिर भी ऋषि दयानन्द ने इसको महत्त्व दिया है। यह संस्कार तीसरे या पाँचवें वर्ष में होता है। इस समय स्वर्णकार या वैद्य को बुला कर कर्ण छेदन कराया जाता है, तथा उसमें सोने की बाली पहना दी जाती है, जिससे कि

घुटा	adj (ppp)	polished
चिकना	adj (ppp)	smooth
खोपड़ा	f	skull, pate
काजल	m	collyrium
टीका	m	forehead mark
नज़र	f	the evil eye
यज्ञवेदी	PN	name of a ceremony
हवनm	fire ceremony	
आशीर्वचन	m	intoning of the blessing
प्रचलन	adj	current
कर्ण भेद	PNm	'The Ear-piercing Ceremony'
ऋषि	m	sage, rishi
महत्त्व	m	importance
स्वर्णकार	m	goldsmith
वैद्य	m	traditional doctor
कर्ण=कान	m	ear
छेदन	m	piercing
पहनना	t	to wear

कान का छेद बन्द न हो जाए। इसके बाद बच्चे को मिठाई खिलायी जाती है। हवन, यज्ञ या पूजा आदि के साथ बच्चे को आशीर्वाद दिया जाता है।

(१०) <u>विद्यारम्भ या पट्टी पूजन</u> - प्रथम शिक्षा माता पिता ही देते हैं। गुरु गृह में तो जाने का रिवाज कम से कम आठ वर्ष का है जबकि बच्चा गायत्री समझने योग्य हो जाए। शिक्षा का यह सबसे पहले संस्कार है। यह बालक के तीसरे वर्ष या पाँचवें वर्ष में होता है। यद्यपि इस संस्कार का विधान कहीं धर्म ग्रन्थों में नहीं है, फिर भी इसका समाज में प्रचलन है।

(११) <u>उपनयन एवं वेदारम्भ</u> - उपनयन संस्कार का हिन्दू वर्ण व्यवस्था में बहुत महत्त्व है। बिना उपनयन कराये कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विज नहीं हो सकता है। शूद्रों के लिये इस संस्कार का निषेध है। ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों के लिये भी इस संस्कार का विधान किया है, परन्तु खेद का विषय है कि हिन्दू स्त्रियाँ इस संस्कार से वंचित ही रहती हैं। यही कारण है कि

छेद	m	hole
मिठाई	f	sweets
आशीर्वाद	m	blessing
विद्यारम्भ	m	'Beginning of Learning'
पट्टी पूजन	f+m	'Lesson Ceremony'
गृह	m	home
गायत्री	PNm	an invocative mantra to Savitṛi
-योग्य	suffix	-able, capable of. . .
उपनयन	PNm	initiation of the twice-born, investiture of the sacred thread
द्विज	adj(m)	'twice-born'; those who have undergone the Upanayana Ceremony
निषेध	m	prohibition
स्त्री	f	woman
खेद का विषय	(note)	"the sad thing is" (खेद m 'sorrow')
वंचित	adj	deprived

अनेक ब्राह्मण अपनी स्त्री के हाथ का पका हुआ भोजन भी नहीं खाते हैं। लेखक का विचार है कि जगद्गुरु शंकराचार्य के समय से ही स्त्रियों को इससे वंचित कर दिया गया था। शंकराचार्य को एक स्त्री से शास्त्रार्थ करना पड़ा था और इसी के कारण वे अमरु राजा के शरीर में प्रवेश कर अनेक काम की बातें जानने गये थे। सम्भवतः इसी कटु अनुभव ने उन्हें 'नारी नरकस्य द्वारम्' कहने के लिये बाध्य किया। दुर्भाग्य से उसी समय से नारी की अवहेलना होती चली आ रही है।

इस संस्कार का समय ब्राह्मण बालक के लिए आठ वर्ष का तथा क्षत्रिय ग्यारह एवं वैश्य बारह वर्ष का है। इस संस्कार के बाद से जनेऊ पहना जाता

पका	adj(ppp)	cooked
भोजन	m	food
लेकख	m	writer (the author)
जगद्गुरु	PNm	-a title- 'World Teacher'
शास्त्रार्थ	m	debate (lit on the Śāstras' meaning)
शरीर	m	body
प्रवेश करना	m+t	to enter
सम्भवतः	adv	possibly
कटु	adv	bitter
अनुभव	m	experience
नारी नरकस्य द्वारम्	(Sanskrit)	"Woman is the door of Hell."
बाध्य करना	t	to force
दुर्भाग्य से	adv ph	unfortunately
अवहेलना	f	disregard, scorn
जनेऊ	m	the 'sacred thread'
पहनना	t	to wear

है तथा अनेक नियमों को पालन करना पड़ता है। जैसे पेशाब या टट्टी करते समय कान पर जनेऊ धारण करना, बाद में हाथ धोना एवं स्नान करना आदि। पूजा का भी नियम है। इस समय बालक ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता है; अतः वह बाल घुटाकर चोटी रखता है, एवं भिक्षा भी माँगता है। आज के कुछ ब्राह्मण समाजों में भिक्षा बहुत आती है, वह परिवार वालों एवं व्यवहारियों से आती है। यह भिक्षा वह सर्वप्रथम माता से या पिता से दण्ड हाथ में ले, पीले वस्त्र धारणकर, मूँज का जनेऊ पहन कर माँगता है।

नियम	m	rule, observance
पालन करना	t	to maintain
पेशाब करना	t	to urinate
टट्टी	f	latrine, toilet
कानm	ear	
धारण करना	m+t	to wear, to keep, to carry
आश्रम	m	*here* : stage of life
अतः	adv	therefore
बाल	m	hair
घुटाना	t	to shave clean
चोटी	f	topknot (a lock of hair left on the top of the head)
भिक्षा	f	alms
व्यवहारी	m	businessman
सर्वप्रथम	adv	first of all
पीला	adj	yellow
वस्त्र	m	clothing
मूँज	f	a long reed for making the जनेऊ

इस संस्कार के बाद वह गुरुगृह चला जाता है, जहाँ वेदारम्भ होता है। इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि वेदों के अध्ययन का प्रारम्भ। इस शिक्षा काल में गायत्री मन्त्र को देने का समय भी विशेष महत्त्व का है। उस समय भी आशीर्वचन आदि होते हैं। गायत्री का संस्कार जब ही किया जाता है, जबकि गुरु यह समझ लेता है कि बालक इस योग्य हो गया कि गायत्री मन्त्र को ठीक से समझ सके। आजकल उपनयन के साथ ही गायत्री बुलवाया जाता है, कभी-कभी इसका अर्थ भी नहीं बताया जाता है। यज्ञोपवीत संस्कार आजकल कुछ संस्कृत हिन्दू परिवारों में ही होता है। अन्यथा ब्राह्मण क्या सभी अन्य वर्णों में शूद्रों को छोड़कर इसका रिवाज विवाह के साथ ही हो गया है।

(१२) <u>समावर्तन संस्कार</u> - यह संस्कार, ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर

गुरुगृह	m	the Guru's house
वेदारम्भ	m	'Beginning the Vedas'
प्रारम्भ	m	beginning
आशीर्वचन	m	blessing
अर्थ	m	meaning
यज्ञोपवीत=यज्ञ+उपवीत		
उपवीत	m	sacred thread
जनेऊ < Prākrit जण्णय < Sanskrit यज्ञक = 'sacrificial'		
अन्यथा	conj	otherwise
को छोड़कर	*here* =pp	with the exception of, leaving aside . . .
रिवाज	m	custom
विवाह	m	marriage
समावर्तन	m	name of a ceremony - 'The Return'
ब्रह्मचर्य आश्रम	m	the student phase of life
समाप्ति	f	end

होता है। ब्रह्मचर्य समाप्त कर ब्रह्मचारी सुन्दर वस्त्र धारण कर कर्म क्षेत्र में प्रविष्ट होता है। आजकल इस संस्कार का महत्त्व कुछ गुरुकुलों में ही रह गया है। इस के साथ-साथ भारत के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में बी० ए०, बी० एस-सी०, बी० कॉम० आदि के उपरान्त दीक्षान्त समारोह होता है।

(१३) <u>विवाह</u> - यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्कार है तथा भारतीय हिन्दू धर्म के अनुसार बिना इस संस्कार के किये कोई भी मुक्त नहीं हो सकता है। विवाह का मुख्य उद्देश्य पितृ ऋण को चुकाना एवं पुत्र की उत्पत्ति से 'पुन्' नाम के नरक से बचना है। विवाह एक स्वयं में संस्था है,

---

ब्रह्मचारी	m	student
कर्म क्षेत्र	m	life's work
प्रविष्ट	adj	entered
गुरुकुल	m	a private residential tutorial school
प्रायः	adv	almost
विश्वविद्यालय	m	university
के उपरान्त	pp	after
बी० कॉम०	(Eng.)	Bachelor of Commerce Degree
दीक्षान्त	m	final initiation
समारोह	m	celebration
के अनुसार	pp	according to
मुक्त	adj	freed, saved
उद्देश्य	m	aim
पितृ-ऋण	m	paternal debt
चुकाना	m	to repay, to satisfy (a debt, or honour)
उत्पत्ति	f	birth
पुत्+नाम=पुन् नाम	PNm	'Put' by name (i.e. the name of a hell)
नरक	m	hell
बचना	i	to be saved

अतः इस पर हम आगे विस्तार से विचार करेंगे। यहाँ इतना ही पर्याप्त है।

(१४-१५) वानप्रस्थ एवं संन्यास - ये संस्कार व्यक्ति के एक आश्रम से दूसरे आश्रम में प्रवेश के कारण किये जाते हैं। इनमें विशेष-विशेष वस्त्र पहने होते हैं जैसे गेरुआ वस्त्र पहन कर संन्यास धारण किया जाता है। यह संन्यास किसी गुरु की सहायता से ही होता है।

(१६) अन्त्येष्टि संस्कार - व्यक्ति के मरण के बाद होने पर भी यह संस्कार कम महत्त्व का नहीं है, क्योंकि हिन्दू इस लोक से अधिक मूल्य परलोक का आंकते हैं। बौधायन पितृ मेध सूत्र में कहा गया है, "यह सुप्रसिद्ध है कि जन्म के बाद के संस्कारों के द्वारा मनुष्य इस लोक को जीतता है और मरण

संस्था	f	institution
आगे	adv	ahead, further on, later
विस्तार	m	detail
पर्याप्त	adj	adequate
वानप्रस्थ	PNm	(3rd life-stage) Forest Sojourn
संन्यास	PNm	(4th life-stage) Monasticism
		also a staff
गेरुआ	m	a reddish-brown loin cloth
सहायता	f	help
अन्त्येष्टि	f	funeral rites
मरण	m	dying, death
लोक	m	world, plane
मूल्यm	value	
परलोक	m	the other world
आंकना	t	to value
बौ. . . सूत्र	PNm	The Father-cloud Sūtra of Bāudhāyana
सुप्रसिद्ध	adj	well known
जन्म	m	birth
जीतना	t	to win, to gain

के बाद के संस्कारों के द्वारा परलोक को जीतता है।"

व्यक्ति की मृत्यु के बाद हिन्दू धर्म के अनुसार उसे जला दिया जाता है। जलाते समय घृत आदि डाला जाता है, एवं वैदिक मन्त्रों का भी प्रयोग होता है। कहीं-कहीं जल प्रवाह भी कर दिया जाता है एवं बच्चे ज़मीन में गाड़े जाते हैं। जलाने के बाद उस स्थान पर मठिया आदि भी बना दी जाती है। कुछ दिनों के बाद मृतक की हड्डियाँ जिन्हें फूल कहते हैं बहोरी जाती हैं एवं उन्हें गंगा में सिरा दिया जाता है, या गाड़ दिया जाता है। मृतक की तेरहवीं आदि की जाती है। जिसके घर मौत हुई होती है, उसके यहाँ अनेक लोग सर मुड़ाते हैं। हिन्दुओं के यहाँ रोने का भी रिवाज है। यह रोना आत्मा को

मृत्यु	f	death
जलाना	t	to burn
घृत	m	ghee
प्रवाह करना	m+t	to pour
गाड़ना	t	to bury
मठिया	f	a small hut
मृतक	m	the dead
हड्डी f	bone	
फूल	m	(*lit.* 'flowers') name given to the burned remains
बहोरना	t	to bring back
सिराना	t	to finish, to cool
तेरहवीं	f	the 13th day (after death)
मौत	f	death
सर=सिर	m	head
मुड़ाना	t	to shave
रोना	m	crying
आत्मा	f	soul

शान्ति देने के लिये होता है क्योंकि इससे यह समझा जाता है कि व्यक्ति की आत्मा यह समझे कि घर वाले प्यार करते थे एवं यह रोना दुःख के कारण भी होता है। मृतक को एक बाँस की अर्थी पर ले जाया जाता है। मुर्दे को स्नान भी कराया जाता है। अर्थी के साथ अनेक व्यक्ति 'राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है', कहते चलते हैं। कपाल क्रिया व्यक्ति के इस जीवन की बातों को भुलाने के लिए की जाती है।

संन्यास आश्रम में चले जाने वाले व्यक्ति के पुतले को जलाकर उसका अन्त्येष्ठि संस्कार करने का विधान है। यह कुछ आदिम जाति की जादू प्रक्रिया से मिलता है, पर इसका उद्देश्य जादू आदि से कुछ नहीं है, केवल प्रतीक मात्र होता है। श्राद्ध एवं तर्पण आदि प्रति वर्ष करते रहने का विधान

शान्ति	f	peace
प्यार करना	t	to love
बाँस	m	bamboo, reed
अर्थी	f	bier
मुर्दा m	corpse	
स्नान कराना	m+t	to bathe
कपाल क्रिया	m+f	'skull-act' - the act of breaking the skull of the burning corpse
भुलाना	t	to cause to forget
पुतला	m	image (proxy)
आदिम	adj	ancient
जादू	m	magic
प्रक्रिया	f	observance
प्रतीक	m	symbol
मात्र	adv	merely
श्राद्ध m	offering for the deceased ancestors	
तर्पण	m	libation to the deceased ancestors

है जिससे कि पूर्वजों की आत्मा को कष्ट न मिले।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू जीवन में जन्म ग्रहण करने से लेकर मृत्यु के उपरान्त तक संस्कारों की एक शृङ्खला है। ये ही जीवन पथ के संस्कार हैं।

पूर्वज	m	ancestors, forebears
कष्ट	m	trouble, distress
ग्रहण करना	m+t	to take
शृङ्खला	f	continuum